डॉ. पी. एस. पाटील
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर- ४१६ ००४

* संस्तुति *

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. संपतराव सदाशिव जाधव का "डॉ. लक्ष्मीनारायणलाल के "'रातरानी' नाटक का अनुशीलन"

लघुशोध -प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर
तिथि. 9।1।1997

(डॉ. पी. एस. पाटील)
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६ ००४

हिन्दी विभाग

डा. एस. जे. वाडकर
भूतपूर्व प्रपाठक,
श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय,
बार्शी,
तिथी : १७·१·९७

प्र मा ण प त्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री. संपतराव सदाशिव जाधव ने मेरे निर्देशन में “ . लक्ष्मीनारायणलाल के "‘रातरानी’ नाटक का अनुशीलन" लघुशोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए रखा है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है और इसमें शोधछात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य लघुशोध प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. एस. जे. वाडकर)

कोल्हापुर
तिथी: १७·१·९७

* प्र ख्या प न *

डा. लक्ष्मीनारायणलाल के " 'रातरानी' नाटक का अनुशीलन " लघुशोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल्. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर

तिथि : ७/९/८८

शोध-छात्र

(श्री. संपतराव सदाशिव जाधव)

" प्राक्कथन "

हिन्दी साहित्य के इतिहास में नाटक विधा को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। वैसे नाट्य-परम्परा काफी प्राचीन रही है। प्रचीन काल में संस्कृत नाटक पाये जाते है। कुछ आलोचक नौटंकी तथा अन्य वाद-संवाद को तक नाटक की कोटि में रखते है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में स्वातंत्र्य प्राप्ति हेतु प्रेरणादायी नाटकों का निर्माण हुआ। इसके प्रवर्तक भारतके हरिश्चंद्र सिद्ध होते हैं। तदुनंतर स्वातंत्र्योत्तर नाटक में नाटककार ने वर्तमान परिस्थिति में स्थित अनेक समस्याओं उठाने का प्रयास किया है। उन्होंने अपनी रचना में सामाजिक वास्तविकता का चित्रण किया है। पाठक नाटक पढ़ते या देखते समय उसमें अपने जीवन की अनुभूति को ढूँढ़ता है, और समाज के यथार्थ का चित्रण खोजता है। डॉ॰ लाल ने ठिक इसी समाज के स्थित अनेक समस्याओं को अपने नाटक में चुना है । डॉ॰ लाल ने प्रयोगशील नाटककार, श्रेष्ठ कहानीकार और अच्छे उपन्यासकार है। उन्होंनें हिंदी साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया है। उनके "रातरानी" नाटक का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध का विषय है।

<u>प्रेरणा</u> :- एम॰ए॰ उत्तीर्ण होने के पश्यात मैंने एम॰फिल॰ मे प्रवेश किया तब कक्षा में हमें बताया गया कि आप लोगों को लघुशोध प्रबंध के संदर्भ में रूपरेखा तैयार करनी है। तब मैंने ग्रंथालय में जाकर अनेक नाटक पढे। उनमे से मुझे डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के मि॰ अभिमण्यू तथा 'रातरानी' नाटक ने आकर्षित किया मैंने "रातराणी" नाटक पर काम करना तय किया क्योंकि उसमें जो वर्गसंघर्ष, परिवार के बनते-बिघडते संघर्ष और लेखक की प्रभावपूर्ण भाषा तथा कोमलता ने मुझे आकर्षित किया। तब मैंने निश्चय किया कि मैं डॉ॰ लाल के 'रातरानी' नाटक पर ही एम॰फिल करूँगा और तब मैंने डॉ॰ पी॰एस॰ पाटीलजी तथा डॉ॰ अर्जुनजी चौहान से प्रस्तुत विषय पर चर्चा की। इन्होंने तुरन्त अनुमति दी। अब मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये-क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इसपर कार्य किया है ? इसकी खोज करते हुए मुझे ज्ञात हुआ की डॉ॰ लाल के"रातरानी" पर किसी भी विश्वविद्यालय में कार्य नहीं हुआ।

इसलिए मैंने "डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के "रातरानी" नाटक का अनुशीलन" विषय पर अपना लघुशोध- प्रबंध लिखना शुरू किया। इस विषय का अध्ययन करते समय शुरू में मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये---

१) डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के कृतित्व पर अनेक व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?

२) 'रातरानी' का कथानक किस प्रकार का है ?

३) नाटक के पात्रों के चरित्र-चित्रण में डॉ॰ लाल कहाँ तक सफल हुए है ?

४) इस नाटक में किस स्थान, समय तथा परिस्थितियोंका चित्रण किया गया है ?

५) नाटक के संवाद तथा भाषा-शैली में लेखक की प्रतिभा कहाँ तक दिखाई देती है ?

६) नाटक में रंगमंच और अभिनय किस प्रकार है ?

७) नाटक लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य क्या है ?

इन सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध में किया है और अंत में उपसंहार के रूप में दे दिया है।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है-----

१) प्रथम अध्याय :-

"डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व" :-

उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है तथा उनकी अलग-अलग विधाओं में लिखी रचनाओं को विभाजित करके उनका संक्षिप्त विवेचन किया है। और विविध साहित्यिक रूपों में चित्रित लाल तथा प्राप्त मान-सन्मानों की जानकारी दी है।

२) द्वितीय अध्याय :- "रातरानी" की कथावस्तु"

प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु तीन अंकों में विभाजित हैं। उसमें प्रारंभ,

विकास, संघर्ष, चरमसीमा, अंत आदि गुणों का ख्याल रखा गया है। इसमें मुख्य पात्रों की सम्बध्द कथा के साथ अन्य उपकथाएँ भी हैं जिनका मैंने लघुशोध प्रबंध में संक्षेप में समावेश किया है।

३) तृतीय अध्याय :- "रातरानी" नाटक के पात्र

इस अध्याय में मैंने पात्रों को स्वरूप के आधारपर महत्व के आधार पर विभाजित करते हुए उनके चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिए हैं।

४) चतुर्थ अध्याय :- "रातरानी" नाटक के संवाद

इस अध्याय के अन्तर्गत मैंने संवाद की परिभाषा, उसका उद्देश्य तथा उसके गुणों की चर्चा करते हुए उसके अनुसार "रातरानी" के संवादों का विवेचन किया है।

५) पंचम अध्याय :- "रातरानी" नाटक का देशकाल-वातावरण तथा भाषाशैली

इस अध्यय के अन्तर्गत उक्त स्थान-काल और परिस्थिति के अनुसार तथा वर्तमान समस्याओं के आधारपर परखा है। तथा भाषाशैली के अन्तर्गत भाषा के रूप तथा शैली के प्रकारों की चर्चा करते हुए अंत में निस्कर्ष दिया हैं।

६) षस्ट अध्याय :- "रातरानी" नाटक का रंगमंचियता एवं अभिनेयता"।

इस अध्याय में मैंने रंगमंच का स्वरूप तथा "रातरानी" में स्थित रंगमंचिय तत्वों का विश्लेषण किया है। जिसके अन्तर्गत निर्मिति, निर्देशक, अभिनय, रूपसज्जा, दृश्यसज्जा, प्रकाश योजना, पार्श्व ध्वनि-आदि का विवेचन किया है। साथ ही साथ अभिनेयता का विश्लेषण किया है।

७) सप्तम अध्याय :- "रातरानी" नाटक का उद्देश्य"

इस अध्या में मैंने नाटक लिखने के पीछे डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लालजी का कौनसा उद्देश रहा इसे ढूँढने का प्रयास किया है, जिसमें मैंने मुख्य तथा गौण उद्देश्यों को पाया और फिर निस्कर्ष रूप में भी उन उद्देश्यों की चर्चा की है।

समग्र अध्यायों के विवेचन के उपरांत "उपसंहार" लिख दिया है। और अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दर्ज की है।

मेरे इस लघुशोध प्रबंध की मौलिकता निम्नलिखित है।

१) सम्पूर्ण विवेचन व्यावहारिक उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है।

२) चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टियों से सामाजिक परिप्रेक्ष्य में परखने की कोशिश की है।

३) भाषा का इतना सुक्ष्म अध्ययन किया है कि हर शब्द की जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है।

४) "रातरानी" नाटक को मंचीयता तथा अभिनेता की दृष्टि से सगुणों से परखा है।

अन्त में प्राप्त निष्कर्षों को उपसंहार में देकर संदर्भ-ग्रंथ-सूची दी है।

ऋण निर्देश

इस लघुशोध-प्रबंध की पूर्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने मेरी मदद की है उन सभी को धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

सबसे पहले तो मैं अपने गुरुवर्य शोधनिर्देशक डॉ. शंकर वाडकरजी (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष श्रीमान भाऊसाहेब झाडबुके महाविद्यालय, बार्शी) के प्रति आभार प्रकट करना चाहूँगा उन्होंने मुझे जो अनमोल मार्गदर्शन किया है उसमें मैं अऋण नहीं हो सकता।

मेरा कोई भी कार्य माता सौ. हरीबाई तथा पिता सदाशिवराव जाधव के आशीर्वाद के बिना पूरा नहीं होता. और मेरे चाचा निवृत्ती जाधव तथा चाची सौ मालन के आशीर्वाद से आज मैने अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा किया है।

इसके साथ ही मेरे अन्य गुरुवर्य डॉ. पी. एस. पाटील,जी (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापूर) तथा डॉ. अर्जुन चव्हाण (अधिव्याख्याता, हिन्दी विभाग शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापुर) ने मुझे पग-पगपर मार्गदर्शन किया। इस ऋण के प्रतिदान में आभार या धन्यवाद जैसे शब्दों से ऋण मुक्ति की कल्पना धृष्टता होगी। साथ ही मुझे सौ. एम. एस. जाधवजी का भी अनमोल मार्गदर्शन मिला।

मेरे मित्र तथा सहकारी परिवार में श्री. प्रा. रविंद्र भणगे, श्री. प्रा. डी. एस. पाटील, अरुण गंभिरे, श्री. प्रा. श्रीधर पवार,

श्री. अविराज शिंदे, तथा मेरे राम जैसे भाई कार्यकारी अभियंता श्री शहाजी जाधव, श्री. यशवंत कोळी, श्री. मुकुंद काकडे, विकास अधिकारी (एल. आय. सी.) श्रीमती जयश्री जाधवजी, आदि ने मेरी सहायता की।

संदर्भ ग्रंथों के बिना कोई भी लघुशोध प्रबंध पूरा नहीं होता। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल समवेत सभी कर्मचारी वर्ग सौ. राणे, आशा संग्राम और स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर के ग्रंथपाल को धन्यवाद अर्पित करता हूँ। जिनके सहकार्य के बिना यह लघुशोध-प्रबंध पूरा न हो पाता, साथ ही मैं टंकलेखक श्री. खाडे, श्री. कदम (कोल्हापुर) का भी आभारी हूँ ।

अंत मे मैं इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपना लघुशोध प्रबंध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर
तिथि : / / १९९६

शोध-छात्र
Sjadhav
(श्री. जाधव संपतराव सदाशिव)

अ नु क्र म णि का

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय :

डा॰लक्ष्मीनारायण लाल का व्यक्तित्व एवं कृतित्व।

द्वितिय अध्याय :

' रातरानी ' नाटक की कथावस्तु ।

तृतिय अध्याय :

' रातरानी ' नाटक के पात्र ।

चतुर्थ अध्याय :

'रातरानी' नाटक के संवाद ।

पंचम अध्याय :

'रातरानी' नाटक का देशकाल वातावरण तथा भाषाशैली।

षष्ठ अध्याय :

'रातरानी' नाटक की रंगमंचियता और अभिनेयता ।

सप्तम अध्याय :

'रातरानी' नाटक का उद्देश्य ।

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ-सूची